तित्थयर

जैन भवन

पू. श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि ३८२००९

वर्ष : २४ अंक : ५
अगस्त २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ अंक - ५, अगस्त २०००

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख; पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं
१.	श्रमण भगवान महावीर -	लता बोथरा	१९५
२.	सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास-	श्री अमरेन्द्र कुमार सराक	२००
३.	मलयासुन्दरी चरित्र -		२१४
४.	जैन धर्म की संक्षिप्त रूपरेखा -	श्री नरेन्द्र सिंहपतसिंहजी दुगड़	२२३

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :
Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

श्रमण भगवान महावीर

पूर्वानुवृत्ति

भगवान के निर्वाण का समय आते ही इन्द्र प्रभु के पास आते हैं और वन्दना कर कहते हैं प्रभु आप तब तक देहत्याग नहीं कीजिये जब तक भस्म ग्रह स्वाति नक्षत्र को अतिक्रम कर उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश न कर जाये क्योंकि यह भावी अनिष्ट की अग्रिम सूचना है। भगवान ने कहा- ऐसा कभी नहीं होता है और न कभी होगा । आयुष्य का एक पल भी कोई बढ़ा नहीं सकता और वीतराग को इस प्रकार का कोई आग्रह नहीं होता। यह कहकर भगवान महावीर ने अपनी समस्त चेतना समेट कर केन्द्रस्थ कर ली और ध्यान में डूब गये। उस वर्षा ऋतु के सातवें पक्ष में कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या के दिन रात्रि के अन्तिम भाग में श्रमण भगवान् महावीर जन्म मरण के बन्धनों को छिन्न कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिवृत, सर्व दुःख हीन हुये।

Robert browing के शब्दों में The Journey is done, the summit attained and the barrier fall. "मैंने यात्रा पूर्ण कर चरम अवस्था प्राप्त की सारे बन्धन गिर चुके हैं।"

उस महामानव के निर्वाण के पथ को प्रकाशमय करने के लिये दीप प्रज्जवलित किये गये और उसी दिन से प्रज्जवलित होती है कार्तिक अमावस्या की दीपावली।

भगवान महावीर के केवली जीवन का वृतान्तः-

श्रमण जीवन का १३वां वर्ष (ई० पू० ५५६) ऋजुवालुका के तटपर केवलज्ञान। रातभर में पावामध्यमा के महासेन उद्यान में पहुँचना। महासेन के द्वितीय समवसरण में संघस्थापना। वहाँ से विहार क्रम से राजगृह जाना। राजगृह के समवसरण में मेघकुमार, नन्दीषेण आदि की प्रवज्यायें। सुलसा, अभय कुमार आदि का गृहस्थ धर्म-स्वीकार। श्रेणिक को सम्यक्त्वप्राप्ति। वर्षावास राजगृह में किया।

१४वां वर्ष (ई० पू० ५५५) वर्षा काल के बाद विदेह की तरफ

विहार। ब्राह्मण-कुण्ड में ऋषभदत्त आदि की दीक्षायें। वर्षावास वैशाली में किया।

१५वां वर्ष (ई० पू० ५५४) चातुर्मास्य के समाप्त होने पर वत्सभूमि की तरफ विहार। कौशाम्बी के उद्यान में जयन्ती की धर्मचर्चा और दीक्षा। वहीं से कौशल की तरफ प्रयाण। श्रावस्ती में सुमनभद्र, सुप्रतिष्ठ की दीक्षायें। विदेह को विहार। वाणिज्यग्राम में गाथापति आनन्द और उसकी पत्नी शिवानन्दा का निर्ग्रन्थ -प्रवचन स्वीकार और श्रावकधर्म के द्वादश व्रतों का लेना। वर्षावास वाणिज्य ग्राम में किया।

१६वां वर्ष (ई० पू० ५५३) वाणिज्यग्राम से मगध की तरफ विहार। राजगृह में समवसरण। कालविषयक प्ररूपण। धन्य, शालिभद्र आदि की दीक्षायें। वर्षावास राजगृह में।

१७वां वर्ष (ई० पू० ५५२) वर्षा ऋतु के बाद चम्पा की तरफ विहार। चम्पा में महचन्द्र आदि की दीक्षायें। कामदेव आदि का गृहस्थ धर्म स्वीकार। उदायन के मानसिक अभिप्राय को जान कर वीतभय की तरफ विहार। उदायन को दीक्षा। फिर विदेह की तरफ विहार। बीच में भूख-प्यास से श्रमणों को कष्ट। वर्षावास वाणिज्य ग्राम में।

१८वां वर्ष (ई० पू० ५५१) बनारस आलभिकादि नगरों में होते हुये राजगृह की तरफ प्रयाण। बनारस में चूलनीपिता और सुरादेव का निर्ग्रन्थप्रवचन स्वीकार, आलभिया में पोग्गल परिव्राजक को प्रतिबोध, चुल्लशतक का श्रमणोपासक होना, राजगृह में समवसरण, मंकाती, अर्जुन काश्यप आदि अनेक गृहस्थों की दीक्षायें। वर्षावास राजगृह में।

१९वां वर्ष (ई० पू० ५५०) मगध भूमि में ही विहार, आर्द्रक मुनि के सामने गोशालक के महावीर पर आक्षेप , राजगृह में अभयकुमार, जालि, दीर्घसेनादि २१ राजकुमारों और श्रेणिक की नन्दा आदि १३ रानियों की दीक्षायें। वर्षावास राजगृह में।

२०वां वर्ष (ई० पू० ५४९) वत्सदेश की तरफ विहार, बीच में आलभिया में समवसरण, ऋषिभद्र श्रमणोपासक की बात का समर्थन, कौशाम्बी में मृगावती और चण्डप्रद्योत की रानियों की दीक्षा, विदेह की तरफ विहार। वर्षावास वैशाली में।

२१वां वर्ष (ई० पू० ५४८) वर्षाकाल के बाद मिथिला की तरफ प्रयाण, वहां से काकन्दी, श्रावस्ती हो कर पश्चिम के जनपदों में विहार। अहिच्छत्र, राजपुर, काम्पिल्य, पोलासपुर आदि नगरों में समवसरण, काकन्दी में धन्य, सुनक्षत्र आदि की दीक्षायें, काम्पिल्य में कुण्डकौलिक और पोलासपुर में सद्दालपुत्र का निर्ग्रन्थ -प्रवचन-स्वीकार। वर्षावास वाणिज्यग्राम में।

२२वां वर्ष (ई० पू० ५४७) मगधभूमि की तरफ विहार, राजगृह में महाशतक का श्रावकधर्म-स्वीकार। पार्श्वापत्यों के प्रश्नोत्तर और महावीर की सर्वज्ञता को स्वीकार। वर्षावास राजगृह में।

२३वां वर्ष (ई० पू० ५४६) पश्चिमी दिशा में विहार। कचंगला में स्कन्धक कात्यायन को प्रतिबोध, श्रावस्ती में नन्दीपिता और सालिहीपिता का श्रावकधर्म-स्वीकार। वर्षावास वाणिज्यग्राम में।

२४वां वर्ष (ई० पू० ५४५) ब्राह्मणकुण्ड के बहुसाल चैत्य में समवसरण, जमालि का शिष्यपरिवार के साथ भगवान् से पृथक् होना, वस्तभूमि की तरफ विहार। चन्द्र सूर्य का अवतरण। मगध की तरफ प्रयाण। राजगृह में समवसरण। पार्श्वापत्यों की देशना का समर्थन। अभयकुमार आदि का अनशन। वर्षावास राजगृह में।

२५वां वर्ष (ई० पू० ५४४) चम्पा की तरफ विहार। चम्पा में श्रेणिकपौत्र पद्म, महापद्मादि दस राजकुमार तथा जिन पालितादि अनेक गृहस्थों की दीक्षायें। पालितादि गृहस्थों का श्रावकधर्म स्वीकार। वहां से विदेहमिथिला की तरफ विहार। काकन्दी में क्षेमक, धृतिधर आदि की दीक्षायें, वर्षावास मिथिला में।

२६वां वर्ष (ई० पू० ५४३) अंगदेश की तरफ प्रयाण, चम्पा में श्रेणिक की काली आदि दस विधवा रानियों की दीक्षायें। पुन; मिथिला को विहार। वर्षावास मिथिला में।

२७वां वर्ष (ई० पू० ५४२) मिथिला से वैशाली के निकट होकर श्रावस्ती की तरफ विहार, बीच में वेहास (हल्ल) वेहल्ल राजकुमारों की दीक्षायें। श्रावस्ती के उद्यान में गोशालक मंखलिपुत्र का उपद्रव। जमालि

का निह्नवत्व। मेंढियग्राम के सालकोष्ठक चैत्य में भगवान् की सख्त बीमारी और रेवती के औषध से उसकी शान्ति। वर्षावास मिथिला में।

२८वां वर्ष (ई० पू० ५४१) कोशल-पाञ्चाल की तरफ विहार। श्रावस्ती, अहिच्छत्रा, हस्तिनापुर, मोकानगरी, आदि नगरों में समवसरण। श्रावस्ती में गौतम और केशीकुमार श्रमण की धर्म चर्चा। हस्तिनापुर में शिवराजर्षि, पुट्ठिल आदि की दीक्षायें। वर्षावास वाणिज्यग्राम में।

२९वां वर्ष (ई० पू० ५४०) वर्षाऋतु के बाद राजगृह की तरफ विहार। राजगृह में आजीवकों के प्रश्न। अनेक मुनियों के अनशन। वर्षावास राजगृह में।

३०वां वर्ष (ई० पू० ५३९) चम्पा की तरफ प्रयाण। कामदेव के धैर्य की प्रशंसा। पृष्ठचम्पा में साल, महासाल की दीक्षायें। दशार्ण देश की तरफ विहार। दशार्णभद्र राजा की दीक्षा। विदेह की तरफ गमन। वाणिज्यग्राम में सोमिल ब्राह्मण का निर्ग्रन्थप्रवचन स्वीकार। वर्षावास वाणिज्यग्राम में।

३१वां वर्ष (ई० पू० ५३८) कोशल-पाञ्चाल की तरफ विहार। साकेत, श्रावस्ती, काम्पिल्य आदि में समवसरण। काम्पिल्यपुर में अम्बड परिव्राजक का निर्ग्रन्थ प्रवचन स्वीकार। वर्षावास वैशाली में।

३२वां वर्ष (ई० पू० ५३७) विदेह, कोशल, काशी के प्रदेशों में विहार। वाणिज्यग्राम में गांगेय के प्रश्नोत्तर। वर्षावास वैशाली में।

३३वां वर्ष (ई० पू० ५३६) शीतकाल में मगध की तरफ विहार। राजगृह में समवसरण। चम्पा में विहार। दर्मियान पृष्ठचम्पा में पिठर, गागलि आदि की दीक्षायें। वर्षावास राजगृह में।

३४वां वर्ष (ई० पू० ५३५) गुणशील चैत्य में कालोदायी को प्रतिबोध। नालन्दा में गौतम और पेढालपुत्र का संवाद। जालि, मयालि आदि मुनियों के विपुलाचल पर अनशन। वर्षावास नालन्दा में।

३५वां वर्ष (ई० पू० ५३४) विदेह की तरफ प्रयाण। वाणिज्यग्राम के समवसरण में सुदर्शनश्रेष्ठि को प्रतिबोध। वाणिज्यग्राम के पास कोल्लाग सन्निवेश में आनन्द श्रमणोपासक के साथ इन्द्रभूति गौतम का अवधिज्ञानविषयक वार्तालाप। वर्षावास वैशाली में।

३६वां वर्ष (ई० पू० ५३३) कोशल, पाञ्चाल, सूरसेनादि देशों में विहार। साकेत में कोटिवर्ष नगर के किरातराज की दीक्षा। कांपिल्य, सौर्यपुर, मथुरा, नन्दीपुर आदि नगरों में समवसरण। पुनः विदेह में विहार। वर्षावास मिथिला में।

३७वां वर्ष (ई० पू० ५३२) मगध की तरफ विहार। राजगृह में समवसरण। अन्यतीर्थिकों के आक्षेपक प्रश्न, कालोदायी के प्रश्न। अनेक दीक्षायें। गणधर प्रभास तथा अनेक मुनियों का निर्वाण। वर्षावास राजगृह में।

३८वां वर्ष (ई० पू० ५३१) मगधभूमि में ही विहार। राजगृह के समवसरण में अन्यतीर्थिकों की क्रियाकाल निष्ठाकालादि विषयक मान्यताओं के संबन्ध में गौतम के अनेक प्रश्नोत्तर। गणधर अचलभ्राता और मेतार्य का निर्वाण। वर्षावास नालन्दा में।

३९वां वर्ष (ई० पू० ५३०) विदेहभूमि की तरफ विहार। मिथिला के माणिभद्र चैत्य में ज्योतिषशास्त्र की प्ररूपणा। वर्षावास मिथिला में।

४०वां वर्ष (ई० पू० ५२९) विदेहभूमि में ही विहार, अनेक दीक्षायें। वर्षावास मिथिला में।

४१वां वर्ष (ई० पू० ५२८) मगध की तरफ विहार। राजगृह में समवसरण। महाशतक श्रमणोपासक को हित-संदेश। उष्ण जलह्रद, आयुष्यकर्म, मनुष्य लोक की मानववसति, दुःखमान, एकान्त दुःख वेदना आदि के संबन्ध में प्रश्नोत्तर। अग्निभूति और वायुभूति का निर्वाण। वर्षावास राजगृह में।

४२वां वर्ष (ई० पू० ५२७) वर्षा ऋतु के बाद भी अधिक समय तक राजगृह में स्थिरता। छठे आरे के भारत और उसके मनुष्यों का वर्णन, अव्यक्त, मण्डित, मौर्यपुत्र और अकम्पिक नामक गणधरों के निर्वाण। पावामध्यमा की तरफ विहार। पावा के राजा हस्तिपाल की रज्जुग सभा में वर्षावास। अन्तिम उपदेश। कार्तिक अमावस्या की रात्रि में निर्वाण और गौतम गणधर को केवलज्ञान-प्राप्ति।

क्रमशः

सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास

श्री अमरेन्द्र कुमार सराक

छोटानागपुर की सभ्यता संस्कृति के अनुसंधान कर्ता Mr. Riseley ने लिखा है:-

In Ranchi it is believed that their old settlement was at ogra, Whence they subsequently migrated to chhotanagpur.

Mr. Riseley का लिखना भी कुछ अयोक्तिक नही है क्योंकि सराकों के पूर्वज श्रावक जाति का मुख्य पेशा था व्यवसाय। ये लोग एक जगह में नहीं बसकर विभिन्न जगह में बस गये थे। अपने व्यवसाय को सही ढंग से चलाने के लिये अभी भी आप देखते होंगे कि मारवाड़ी और गुजराती देश के हर शहर में बसे हैं तथा उस क्षेत्र के व्यवसाय को उन्होंने अपने नियंत्रण में रखा है। उसी प्रकार श्रावक जाति पूर्वांचल की प्राय; सभी मुख्य जगह में ईसा के जन्म के पहले ही बस गयी थी।

उड़ीसा में भी श्रावक या सराक जाति के बस जाने का प्रमाण मिलता है। जनश्रुति के अनुसार कुछ सराकों के पूर्वज वर्द्धमान से पुरी गये थे तीर्थ यात्रा के लिये। उड़ीसा के उदयगिरि गये थे पूजा करने के लिये क्यों कि उदय गिरि का निर्माण जैन धर्मावलम्बी राजा खारवेल ने किया था। सराक लोगों ने जिस समय उड़ीसा की यात्रा की थी उस समय इन जैन यात्रियों के आगमन की वार्ता सुनकर वहां के राजा ने जैन यात्रियों से भेंट की तथा उनके राज्य में बस जाने के लिये उन लोगों से आग्रह किया। अपने प्रासाद के बगलमें ही उन लोगों को बसने की जगह दी।

उन जैनों को बौद्ध धर्म में आकृष्ट करने के लिये ही उनलोगों पर यह सहानुभूति प्रदर्शन किया गया था। धर्मान्तरण कराने के लिये कुछ दिन पश्चात् जब राजा ने उन जैनियों को बौद्धधर्म ग्रहण करने के लिये वाध्य किया तब उन जैनों अर्थात सराकों में कुछ लोग पार्श्वनाथ की तरफ जाने के उद्देश्य से चले और रास्ते में सराकों द्वारा स्थापित

शिखर राज्य में बस गये।

फिर शिखर राज्य के ध्वंस के पश्चात धलभूम-सिंहभूम तथा वहां से जाकर रांची में कुछ लोग बसे। उनमें से कुछ सराक श्रुति द्वारा अपना इतिहास सुनते आ रहे हैं कि हम उड़ीसा से आये है। जो लोग उड़ीसा से नहीं आये थे उनलोगों ने कुछ दिनों तक राजा के डर से जैन धर्म का क्रिया काण्ड छोड़ दिया मगर आचार-आचरण नही छोड़ा। इनके वंशज वर्तमान में उड़ीसा के कुछ जगह में अभी भी पाये जाते हैं।

रांची के कुछ लोग जो अपना आदि निवास उड़ीसा (Ogra) बताते हैं परन्तु यह नही बता सकते है कि उनके पूर्वज कहां से उड़ीसा पहुंचे थे।

Mr. Riseley ने एक जगह और लिखा है कि:- **In Birbhum and Burdwan it is a tradition that they originally came from Gujrat, But in the former district the popular belief is that they were brough thither as sculptues and masons for the construction of stone temples and houses, The remains which are visible on the Bank of Barakar.**

लोगों को प्राचीन इतिहास जितना भी उपलब्ध हुआ है वह श्रुति या दन्त कथाओं या अनुमान के आधार पर ही मालुम हुआ है, उसका कोई लिखित इतिहास नहीं है जिससे कोई सच्ची धारणा प्राप्त की जा सके। वर्द्धमान जिले के कुछ स्थानों में प्राचीन जैन मंदिरों का अवशेष देखने को मिलता है। उसी के आधार पर मुकुन्द राम के चण्डीमंगल काव्य द्वारा लोगों ने यह प्रचार किया कि ये सराक लोगों के पूर्वज ही आकर यहां पर इन मंदिरों को बनाये थे। बात सही ही है मगर सराकों के पूर्वजों ने मंदिरों को अपने हाथ से नहीं बनाया, न सराकों के पूर्वज मन्दिर बनाने वाले शिल्पी थे। सराकों ने उन सब मन्दिरों को किसी समय बनवाया था। वही बात श्रुति से या दन्त कथा से चलती आ रही है। महावीर स्वामी के जन्म के पहले इस क्षेत्र में भगवान पार्श्वनाथ का आगमन हुआ था। उनका निर्वाण पारसनाथ में हुआ था। उनके अनुयायी जो श्रावक उनके साथ आये थे उनलोगों द्वारा उनके निर्वाण के पश्चात कोई जैन मंदिर बनाया गया। इसका प्रमाण नहीं मिलता है। मगर

महावीर स्वामी जब पूर्वांचल में जैन धर्म का प्रचार किये और पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किये उसके बाद उनकी स्मृति में इस क्षेत्र में उनके साथ-साथ २४ तीर्थंकरों के मन्दिरों का निर्वाण पूर्वांचल में काफी हुआ। महावीर स्वामी या वर्द्धमान स्वामी के नाम से ही वर्द्धमान जिला तथा शहर का नाम पड़ा है। Riseley साहब ने अपने Survey करने के दौरान जिस आदमी से बयान प्राप्त किया उसी को लिपिबद्ध किया। उस बात में सच्चाई कितनी है उसका निराकरण हमें करना है। Mr. Riseley ने एक और स्थान पर लिखा है कि:-

"It is reported in from Ranchi and Manbhum that they claim for merly to have Agarwals Who venerated Parswanath and inhabited the Country on the bank of the river saraju Which flows the river ganges near Gazipur, in the united Province (U.P) Where they lived by trade and money lending. They can not explain why they left their original home."

Riseley साहब का अन्तिम विवरण ही सच मालुम पड़ता है, क्यों कि अंग्रेज अनुसंधान कर्ता लोगों से तथा जैन आगमग्रन्थों दोनों से ही हमें यह पता चलता है कि सराक जाति ने भगवान महावीर के जन्म के पहले से ही छोटानागपुर के इस पार्श्वनाथ पर्वत संलग्न क्षेत्र में अपना निवास कायम किया था। भगवान महावीर का इस क्षेत्र में आगमन, सराकों के बीच शिखरभूम में चौमासा उदयापन तथा उस क्षेत्र के क्रूर या अनार्य जाति के लोगों द्वारा उत्पीड़न, ये सारी बातें आगमग्रन्थों में लिखी हुई हैं। अनार्यो द्वारा उत्पीड़न के पश्चात सराको द्वारा ही महावीर स्वामी की सेवा शुश्रुषा की गयी थी।

अंग्रेज अनुसंधान कर्ता लोग उपर्युक्त बातों को लिखने के साथ-साथ यह भी लिखते हैं कि सराक जाति के पूर्वज श्रावक लोग जैनों के २३वें तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ के साथ २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के जन्म के २५० सौ वर्ष पहले छोटनागपुर के इस क्षेत्र में पैर रखने वाले पहली आर्य सन्तान हैं। इससे साफ जाहिर हो जाता है कि आज से करीब २८०० सौ वर्ष पूर्व सराक जाति के पूर्वजों का आगमन भगवान पार्श्वनाथ के जन्म स्थान वाराणसी या काशी के अगल-बगल के ही

किसी क्षेत्र से हुआ था। और इसमें कुछ सन्देह रहने की गुंजाइश ही नहीं रह जाती है कि सराकों के पूर्वजों का आदि निवास स्थान वाराणसी के क्षेत्र में था।

जैन शास्त्रों के अनुसार प्रभु पार्श्वनाथ का जन्म ईसा पूर्व ८७७ को काशी में हुआ था। उनके पिता का नाम राजा अश्वसेन, माता का नाम वामादेवी एवं स्त्री का नाम प्रभावती था। महाराज अश्वसेन नागवंशी नृपति थे। भगवान पार्श्वनाथ ने सत्तर वर्ष तक धर्म प्रचार किया और सौ वर्ष की अवस्था में उनको श्री सम्मेद शिखर जी में मोंक्ष प्राप्त हुआ। प्रभु पार्श्वनाथ के निर्वाण के पश्चात उनके साथ आये हुए सराकों के पूर्वज श्रावक लोग पार्श्वनाथ पर्वत संलग्न क्षेत्र में ही बस गये। आज से १५०/ २०० साल पहले तक भी सराक जाति के लोग सवेरे बिस्तर छोड़ने के बाद पहले भगवान पार्श्वनाथ का स्मरण करते थे एवं सम्मेद शिखरे की तरफ मुड़कर नत मस्तक होते थे। वर्तमान हिन्दू समाज में जैसे एक कहावत है कि:-सर्वतीर्थ बार-बार गंगासागर एक बार अर्थात सभी तीर्थों की यात्रा बार-बार करने से जो फल मिलता है, गंगासागर पर एक बार यात्रा करने से ही वह फल मिलता है। उसी प्रकार आज से ६० वर्ष पूर्व मैंने भी एक १५५ वर्ष उम्र के मेरे ही गांव के एक वृद्ध व्यक्ति से सुना था कि हमारा सबसे बड़ा तीर्थ है पार्श्वनाथ और वहाँ की यात्रा करने से और कोई तीर्थ की यात्रा की जरूरत नही होती। उन्होंने यह भी सुनाया था कि वह जवानी में भी पैदल यात्रा कर घी चढा कर आये थे अर्थात दीप जलाने के लिये घर का घी लेकर जाते थे। उसी का अनुकरण कर वर्तमान में घी की बोली होती है आरती के लिये।

सराक जाति का छोटानागपुर में आगमन

सराक जाति के आगमन के पूर्व इस क्षेत्र का अर्थात छोटानागपुर का अलग ही कुछ नाम था या यहां पर किसी जाति का स्थायी निवास नही रहने के कारण कुछ नाम ही नही था। पार्श्व प्रभु के आगमन के पूर्व पार्श्वनाथ पर्वत को समेत कहा जाता था। उस समय इस अंचल में घूमने-फिरने वाले आदिवासी लोग पर्वत को अपनी भाषा में समेय कहते थे। तीर्थंकरो का इस पर्वत पर निर्वाण होने के पश्चात श्रावक लोगों के

पास यह पर्वत समेत नाम से परिचित हुआ। पार्श्व प्रभु जब इस पर्वत के शिखर पर निर्वाण प्राप्त हुये तब उनके साथ आने-वाले उनके अनुयायी श्रावकगणों ने इस पर्वत का नाम समेत शिखर रखा क्यों कि समेत के शिखर पर पार्श्व प्रभु ने निर्वाण प्राप्त किया था।

छोटानागपुर क्षेत्र में पहले आने-वाली आर्य जाति की इस शाखा (श्रावक) के पूर्वज अयोध्या नगरी के अगल बगल के क्षेत्र से पूर्वांचल की ओर निवास की खोज में बढ़े। अयोध्या की आबादी बढ़ जाने के कारण श्रावक-अश्रावक सभी लोग पूर्व क्षेत्र में आये। इस पूर्वी क्षेत्र में उस समय रहने वाले प्राचीन आदिम आदिवासी थे द्रविड़ और कोल जो अनार्य थे। श्रावक-अश्रावक सभी लोगों को अर्थात वैदिक अवैदिक दोनो आर्यो का इन लोगों से काफी संघर्ष चला था।

अथर्व वेद के अनुसार धीरे-धीरे पूर्वी क्षेत्र में वैदिक, अवैदिक दोनों, आर्यों ने अपना प्रभाव विस्तार किया। एक-एक कबीला एक-एक सरदार के नेतृत्व में अग्रसर होता था। आपदाओं का सामना करने के लिये सब झुण्ड में चलते थे।

आर्यों का यह कबीला जहां अपना निवास कायम कर लेता था वहां के अगल बगल के क्षेत्रों को अपने शासनाधीन कर लेता था। इस तरह से यह आर्य लोग एक-एक क्षेत्र में अपने राज्य की स्थापना किये। वाराणसी, श्रावस्ती, हस्तिनापुर, मिथिला रत्नपुर, राजकौशम्बी, चम्पा, शौरीपुर आदि राज्यों की स्थापना उस युग में इसी प्रकार से हुई थी। तीर्थंकर भगवान का जन्म किसी राजा जमीदार या कोई महान परिवार में ही होता था। इसका यतिक्रम हो जाने पर इन्द्र महाराज द्वारा गर्भ परिवर्तन कर दिया जाता था। २४ तीर्थंकरों में अधिकांश तीर्थंकर उपरिउक्त राज घराने में ही जन्म ग्रहण किये थे तथा जैन धर्म के संस्कार के साथ-साथ जैन शासन की शोभा बढ़ाये थे।

तीर्थंकर भगवन्तों का जैन धर्म के संस्कार हेतु युग-युग में आविर्भाव के क्रम में महाभारत युग में २२वें तीर्थंकर नेमिनाथ का जन्म हुआ। भगवान नेमिनाथ महाभारत के युद्ध के नायक अर्जुन के सारथी श्री कृष्णजी के चचेरे भाई थे। पिता का नाम था समुद्रविजय और माता

का नाम था शिवा देवी। समुद्र विजय एक प्रभावशाली राजा थे। उनके परिवार के लिये यह सौभाग्य की बात थी कि श्री कृष्ण जी ने पाण्डव सेना की बागडोर सम्हाली तो श्री नेमिनाथ भगवान ने जैन धर्म की बागडोर सम्हाली। महाभारत का युद्ध खत्म होने के पश्चात् श्री कृष्ण जी ने अपना राज्य शौरीपुर से द्वारका (गुजरात) में स्थानान्तरण किया। वही पर श्री नेमिनाथ को विवाह के अवसर पर वैराग्य उत्पन्न हुआ और विवाह मंडप छोड़ कर दीक्षा ग्रहण किये। जीवन भर जैन या श्रावक धर्म का प्रचार करते हुए गुजरात के गिरनार पर्वत पर मोंक्ष सिधारे।

भगवान नेमिनाथ के पश्चात २३वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म ईसा पूर्व ८७७ में वाराणसी नगरी में हुआ था। इनके पिता का नाम था अश्वसेन तथा माता का नाम था वामा देवी। इनके पिता भी राजा थे। जैन शास्त्रों में जैसे अयोध्या को एक प्राचीनतम शहर तथा आध्यात्मिक विचार धारा वाले लोगों की वासभूमि माना जाता है, उसी प्रकार हिन्दू स्थान के सभी वर्गों के लोग काशी या बनारस को दुनिया के प्राचीनतम तथा श्रेष्ठ शहरों में गिनते हैं। आर्य लोगों का जिस समय भारत के पूर्वांचल की ओर बढ़ना शुरु हुआ था सम्भवतः उसी समय उस राज्य की (वाराणसी) स्थापना आदिदेव या महादेवजी के मन्दिर सृष्टि कर्ता की स्मृति के रूप में की गयी थी। कल्पसूत्र के अनुसार प्रथम तीर्थंकर आदिदेव तथा अन्तिम या २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी अचेलक थे अर्थात नग्न अवस्था में रहते थे। अतः सृष्टि के प्रारम्भ में लोग श्री आदिदेव या ऋषभदेव या महादेव की नग्न रुप में ही पूजा करते थे। कुछ दिन पश्चात मनुष्य जब सभ्यता की ओर अग्रसर हुआ तब उसके मन में रुचि का फर्क आ जाने पर नग्न मूर्ति के स्थानपर सिर्फ लिंग की ही स्थापना कर पूजा करने लगा। इसी समय सम्भवतः आर्य लोग दो शाखाओं में बँट गये - वैदिक आर्य और अवैदिक आर्य अर्थात श्रावक या जैन। धीरे धीरे सारा शहर मन्दिरों से भर गया जिसे अभी मन्दिरों का शहर कहा जाता है। यह बनारस या वाराणसी हिन्दुओं के पवित्र तीर्थों में से एक है। वैज्ञानिक कथाओं के अनुसार राजा सत्यवादी हरिश्चन्द्र की स्मृति भी इस शहर के साथ जुड़ी हुई है। विश्व की प्राचीन सभ्यतायें

जिस समय भ्रूण अवस्था में थी उससे काफी पहले वाराणसी के विद्या तथा वैभव का परिचय दुनिया को मिला था। जगह के महात्मय के चलते ही हो या आर्य लोगों का स्थान चयन के कारण ही हो, बनारस या वाराणसी हर दृष्टि से सुरक्षित है, हिन्दु शास्त्र के अनुसार यहां न कभी भूकम्प हुआ न कभी होगा।

इसी पवित्र भूमि में राजा अश्वसेन के घर प्रभु पार्श्वनाथ का जन्म हुआ। इनके जन्म के पहले इनकी माता ने चौदह सुस्वप्न देखे। जिस प्रकार का स्वप्न पूर्ववर्ती तीर्थंकरों की माताओं ने भी देखा था। इसलिये राजा अश्वसेन को इनके जन्म के पहले ही मालुम हो गया था कि मेरे घर में अवश्य ही कोई असामान्य आत्मा जन्म लेगा जो अपने को दुनिया के कल्याण में उत्सर्ग कर देगा। वैसा हुआ भी।

बचपन से ही पार्श्वनाथ उदासीन रहते थे। विद्याभ्यास में तेज थे मगर राज्य के काम-काज में दिलचस्पी नही थी। इन्हें संसार के माया जाल में फंसाकर रखने के लिये राजा प्रसेनजीत की एक सुन्दरी कन्या प्रभावती से इनकी शादी कर दी गई। मगर कोई भी बन्धन इनको संसार जीवन से बाँधकर नही रख सका। इन्होंने संसार के विलास युक्त जीवन से मुंह मोड़ लिया और सांसारिक जीवन त्याग कर सन्यास जीवन व्यतीत करने के लिये दीक्षा ग्रहण की। उन्होंने मानव जाति के कल्याण हेतु श्री आदिनाथ भगवान द्वारा प्रचारित श्रावक धर्म का प्रचार किया। देखते-देखते काफी लोग इनके भक्त बन गये। इनमें श्रावक धर्म को मानने वाले पुराने लोगों के साथ-साथ कुछ नये लोग भी थे। जगह-जगह अपना उपदेश देने के पश्चात अपनी आत्मा की मुक्ति के लिये कठोर तपस्या करने का स्थिर किया तथा अपने पूर्ववर्ती १९ तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि पार्श्वनाथ पर्वत को ही तपस्या का सही स्थान समझा। उनके भक्तों को यह मालूम हो गया कि प्रभु पार्श्वनाथ पर्वत की यात्रा(तीर्थयात्रा) करने के उद्देश्य से शीघ्र ही बिहार करने वाले है। इस बात को सुनकर भक्तों के अन्दर बेचैनी फैल गयी कि अब प्रभु हमलोगों को छोड़कर चले जायेंगे। कुछ भक्तों के मन में ऐसा विचार आया कि पार्श्वनाथ या समेत शिखर जैसे तीर्थ की यात्रा करने का यही अच्छा

मौका है अतः हम लोग भी प्रभु के साथ चलें। ऐसे भी तो हमारे श्रावक धर्म के अनुसार प्रभु के अगले ठहराव तक हमें साथ जाना ही है। ऐसा विचार रखते हुए कुछ भक्तों ने प्रभु से आवेदन किया साथ में समेत शिखर तक जाने का आदेश देने के लिये। कुछ लोगों को साथ में जाने के लिये तैयार होते हुए देखकर भक्तों का एक बड़ा काफिला तैयार हो गया।

उस समय तो वर्तमान युग के जैसा यानवाहन का साधन नही था। एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिये बीच-बीच में अर्थात नजदीक-नजदीक में कोई गांव या शहर रात्रि यापन के लिए या भोजन सामग्री खरीदने के लिये नही थे यद्यपि उस समय घोड़ा गाड़ी या बैल गाड़ी उपलब्ध थी किन्तु जैन मुनि लोगों को सवारी में चढ़ना निषेध था। सभी भक्तों को साथ में पैदल तथा ड़ेढ दो महिने के खाने पीने का सामान घोड़ा गाड़ी में लाद कर परिवार के साथ ये लोग चल दिये। उस समय तो पक्का रास्ता नही था। मगर एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिये झाड़ी-जंगलो के बीच पगडंडी अवश्य ही था। ऐसे ही एक कच्चे रास्ते से वर्तमान भोगलसराय, गया, रजौली जमुई, गिरिडीह होते हुए श्रावक भक्तों ने सभी बराकर नदी संलग्न वर्तमान पालगंज के क्षेत्र में आकर अपना पड़ाव ड़ाला। आज तो पार्श्वनाथ संलग्न क्षेत्र का जंगल प्रायः खत्म हो चला है। जानवर सब भी धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे है। आज से ५० साल पहले भी पर्वत पर सिंह तथा शेरों का गर्जन सुना जाता था मगर आज इस पर एक लकड़बग्घा भी देखने नही मिलता। इसी से आप अन्दाज लगा सकते है कि उस जमाने में अर्थात आज से २८०० सौं वर्ष पहले पार्श्वनाथ क्षेत्र में कैसा घनघोर जंगल था। उतने बीहड़ जंगल के बीच से रास्ता तय कर पहाड़ पर चढ़ना आम आदमी के लिये आसान नही था। सम्भवतः इसीलिये श्रावक लोग पालगंज के क्षेत्र में १०/१५ दिन ठहर कर पहाड़ पर चढ़ने की योजना बना रहे थे।

वर्तमान युग में लोग जैसे हिमालय पर्वत पर चढ़ने के लिये नेपाल पहुँचते हैं और रास्ता दिखाने के लिये तथा हिमालय पर्वत पर चढ़ने के लिये सहायता हेतु पहाड़ी लोगों को साथ लेते है। उसी प्रकार जब

श्रावकगण जंगल में विचरण करने वाले आदिवासियों को साथ लेकर पर्वत (पार्श्वनाथ) पर चढ़ने की तैयारी कर रहे थे तभी पार्श्व प्रभु को पालगंज के क्षेत्र में केवलज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात तो उनके सामने कोई समस्या ही नही रह गयी। प्रभु पार्श्वनाथ ने तत्कालीन समेय या साकेत नाम के पर्वत पर आरोहण किया। साथ में कुछ भक्तों ने भी आरोहण किया थो। अन्न-जल त्यागकर प्रभु पार्श्वनाथ पर्वत की चोटी पर कठोर तपस्या में लीन हो गये। अल्प दिन के अन्दर ही प्रभु मोंक्ष प्राप्त हुए। प्रभु पार्श्वनाथ के मोंक्ष प्राप्ति के पश्चात भक्त श्रावकों को अर्थात सराक जाति के पूर्वजों को गहरा धक्का तो अवश्य ही लगा था, दुःखित भी काफी हुए थे। मगर उस दुःख के अन्दर भी उन लोगों को खुशी इस बात की थी कि प्रभु का अन्तिम कृत्य करने का तथा सेवा करने का मौका मिला।

प्रभु पार्श्वनाथ के साथ आने वाले श्रावक गण व्यवसायी थे। यहां आने के पश्चात इस जगह को भी व्यवसाय के लिये उचित स्थान समझा। दूसरी तरफ अपना पुराना व्यवसाय तो बन्द करके ही आये थे इसलिये पुरानी जगह में लौटकर जाने से यहीं बस कर नया धंधा करना अच्छा समझा। ये कोई नयी बात नही है। आधुनिक युग में भी यह घटना घटी है। एक बार पंजाब से कुछ यात्री मान सरोवर यात्रा के लिये निकले मगर यात्रा करके वो लोग पंजाब नही लौटकर उत्तर बिहार में बस गये तथा स्थानीय लोगों के साथ शादी ब्याह चालू कर दिया। सिर्फ टाईटल पुराना अर्थात पंजाबी है इस लिये पहचाना जाता है।

पार्श्व प्रभु के निर्वाण के पूर्व पार्श्वनाथ पर्वत को स्थानीय लोग समई या समद कहता था। पार्श्व प्रभु को इसके सर्वोच्च शिखर पर कठोर तपस्या की अवस्था में निर्वाण प्राप्त हुआ था इसलिये सराकों के पूर्वज श्रावक लोगों ने इस पर्वत का नाम समद शिखर जिसका अपभ्रंश रुप ही सम्मेत शिखर हुआ। तथा कुछ लोगों ने पार्श्वनाथ भगवान के नामानुसार इस पर्वत का नाम पार्श्वनाथ पर्वत रख दिया। प्रभु की स्मृति को युग-युग तक अमिट रखने के लिये सराक या श्रावकों के वंशज लोग उस समय से १८०० शताब्दी के प्रारम्भ तक इस पुण्य भूमिपर दर्शन हेतु

आते थे तथा किसी चीज को परित्याग करने का व्रत लेकर घर लौटते थे। अर्थात किसी पाप कर्म से निवृत्त होने की प्रतिज्ञा लेते थे। आगेचल कर परिस्थितियों ने सराक जाति को इस पर्वत पर दर्शन के लिये आने में बाधा डाली मगर यह जाति पार्श्व प्रभु को नही भूली। E.T. DALTON का निम्नलिखित लेख इस बात की पुष्टि करता है:- They (Saraks) must not eat till they seen the sun and venerate Parswanath लोग सूर्योदय के बाद पार्श्व प्रभु की आराधना करने के पश्चात ही भोजन ग्रहण करते थे।

प्रभु के निर्वाण के पश्चात पार्श्वनाथ के तलहटी के क्षेत्र को निवास के अनुकूल देखकर श्रावक लोग वर्तमान पालगंज क्षेत्र में बस गये। उस समय पालगंज का कुछ दूसरा ही नाम रहा होगा। इसी क्षेत्र में पार्श्वप्रभु को केवल ज्ञान हुआ था इसलिये लोग उसी पूज्य भूमि में पहले बसे थे। फिर आबादी वृद्धि के कारण लोग पार्श्वनाथ पर्वत के दक्षिण पूर्व की ओर बढ़े थे। कुछ सराकों या श्रावकों के वंशजो का ३००शताब्दी तक शान्ति से पालगंज क्षेत्र में रहने का प्रमाण मिलता है। महाधीर स्वामी ने भी सराकों के इस क्षेत्र में बिहार तथा चौमासा किया था। महावीर स्वामी के निर्वाण के पश्चात ही इस क्षेत्र में तीर्थंकरों की स्मृति में मन्दिर निर्माण हुआ था। इसी समय सम्भवतः पार्श्वप्रभु की स्मृति में पालगंज क्षेत्र में एक मन्दिर का निर्माण सराक जाति के पूर्वजों द्वारा किया गया था जो कैवलीन मन्दिर के नाम से जाना जाता था। छोटानागपुर क्षेत्र में ये आर्य सन्तान सराक लोगों द्वारा ही पहले पालगंज में गांव बसाने की नींव रखी गयी थी।

ऐसा माना जाता है कि राजपूत काल में अर्थात ६००/७०० ईसवी में रीवां मध्यप्रदेश से दो भाई अपना पैंतृक निवास छोड़कर इस क्षेत्र में आये थे अपने भाग्य के सन्धान में। बड़े भाई का नाम था पालदेव सिंह जो लुटेरी प्रवृत्ति का था। ये जाति से अपने को राजपूत कहते थे। ये राजपूत जाति का उदय कैसे हुआ इसका कुछ इतिहास मालुम नहीं है। सम्भवतः राजा का पुत्र होने के नाते यह लोग राजपूत कहलाये। ये राजपूत जाति उच्चाभिलाषी, वीर, साहसी, बलवान तथा साम्राज्य गठन में अग्रणी थी। इस लिये सारे उत्तर भारत में क्रमशः इस राजपूत जाति

ने अपना राज्य कायम किया था। बहादुरी के कारण ब्रिटिश फ़ौज में भी इस राजपूतों की रेजिमेन्ट ने अपना नाम कमाया था।

पार्श्वनाथ पर्वत के उत्तर तथा बराकर नदी के किनारे सराकों के पूर्वजों ने एक समृद्धशाली बस्ती की स्थापना की थी और उस स्थान को एक जैन धर्म के केन्द्र के रूप में स्थापित किया था। उस जमाने में पार्श्वनाथ पर्वत के अगल बगल में जितने भी सराक जाति के लोग थे वे सभी इस जैन केन्द्र में आकर ठहरते थे। यहीं से आदिवासियों को साथ में लेकर पहाड़ पर यात्रा करते थे। वर्तमान काल में जैसे तीर्थयात्री लोग मधुवन में आकर ठहरते हैं और पहाड़ की यात्रा करते हैं उसी प्रकार उस समय मधुवन क्षेत्र घनघोर जंगल से भरा हुआ था जहां शेर, सिंह आदि जंगली जानवर विचरते थे। इसलिये सराक जाति द्वारा वर्तमान पालगंज में एक जैन केन्द्र की स्थापना की गयी थी। उस जगह का नाम पहले कुछ दूसरा ही था। पालदेव सिंह ने जब इस जगह को अपने अधिकार में लिया तब इस गांव का नाम रखा पालगंज! इस गांव पर अधिकार करने के पूर्व पार्श्वनाथ क्षेत्र के सभी श्रावक अर्थात सराकों के पूर्वज शिखरजी यात्रा के क्रम में यहाँ अवश्य ही आते थे और दो चार दिन अवश्य इस जैन केन्द्र में ठहरते थे फिर तीर्थराज की यात्रा शुरु करते थे। नवागत जैन बन्धुओं ने उसी के अनुरुप मधुवन में अपने नये जैन केन्द्र की स्थापना वर्तमान काल में की है और यहीं से तीर्थराज की यात्रा करते है।

उस युग में पालदेव सिंह भी सुन चुका था कि पूर्वांचल में काफी पड़ती जमीन है एवं उस क्षेत्र के लोग भोले भाले हैं जहां जमींदारी या राज्य कायम करना आसान है । पालदेव सिंह आगे बढ़ते-बढ़ते पार्श्वनाथ के तलहटी के उस पालगंज क्षेत्र में पहुंचा। उसके इस क्षेत्र में आगमन के समय छोटानागपुर अंचल में आकर बाहर के लोग भी अपना निवास कायम करना शुरु किये थे। हिन्दुस्तान की राजनैतिक परिस्थिति उस समय अच्छी नहीं थी। सनातन धर्म का प्रभाव क्षीण होता जा रहा था। जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म में अपना-अपना प्रभाव विस्तार करने से लेकर हर क्षेत्र में तीनों धर्म के आदमियों का निवास अवश्य ही था मगर अन्दर

से एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को मिटाने की कोशिशे हरसमय करता था। इसी का फायदा उठाकर पालदेव सिंह ने अपने साथ लाये हुये लठधर तथा गांव के जैन विद्वेषियों की सहायता से गांव के जैन सम्प्रदाय को लूटकर उनकी जगह - जमीन पर कब्जा कर लिया। जैनों के मन्दिर आदि भी नष्ट कर दिये। उसी समय सराक जाति ने उस क्षेत्र को त्यागकर सम्भवतः दामोदर के किनारे में स्थापित जैन राज्य शिखर भूम में आ गयी। इस तरह शिखर मूल राज्य की स्थापना सराक जाति द्वारा ईसा के पूर्व में हुई।

वर्तमान काल में भी पालगंज के राजघराने में एक जैन मन्दिर है। अजैन जमींदार के घर में जैन मन्दिर का होना जैन लोगों के अन्दर कुछ संदेह पैदा हो सकता है। इसलिये पालगंज के जमींदार ने अपने एक नये इतिहास की रचना की कि-पार्श्वप्रभु ने एक दिन स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि मेरी मूर्ति उस जगह गड़ी हुई है उसे तू ले आकर स्थापना कर। जमींदार तब मूर्ति को उठवा कर ले आया और आपने घर में स्थापित की। पालदेव के नाम से ही उस बस्ती का नाम पालगंज पड़ा जिसकी स्थापना जमींदार पालदेव सिंह ने की थी। मगर असलबात कुछ दूसरी ही है। पार्श्वप्रभु के साथ आये हुए सराकों के पूर्वजों के द्वारा ही पालगंज क्षेत्र को आबाद किया गया था। जब पालगंज को पालदेव सिंह ने लूट लिया और मंदिर को तोड़कर उसी अहाते में अपना मकान बनाया।उसके बाद उसके दिन सुख पूर्वक नही बीत रहे थे। भाई के साथ भी झगड़ा शुरु हो गया। पारिवारिक अशान्ति दिन-दिन बढ़ने लगी। इससे उनके मन में यह चिन्ता हुई कि मैने मन्दिर को तोड़ा हैं शायद इसीलिये मुझे इन सभी दुर्गतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिये अपने कुकर्म का प्रायश्चित करने के लिये तथा जैन भाईयों का सदा के लिये शोषण करने के लिये स्वप्न में पार्श्वप्रभु से मन्दिर बनाने का अफवाह फैला कर पुनः मन्दिर निर्माण कर पार्श्वप्रभु की मूर्ति स्थापित की। जिसके दर्शन के लिये आज हजारों यात्री आते हैं तथा कुछ न कुछ चढ़ाकर ही जाते है। पालदेव के साथ झगड़ा होने के कारण उनके भाई पालगंज छोड़कर वर्तमान निमियाघाट में बस गये। धनबाद के राजा के पूर्वज भी कुछ उसी परिवेश से आये थे।

पार्श्व प्रभु का मन्दिर तो पुनः पालगंज में स्थापित हुआ मगर तब तक सराकों के पूर्वज वहां से चल दिये अपना सम्मान तथा प्रतिष्ठा को बचाये रखने के ख्याल से। पालगंज जमींदार परिवार का इतिहास जो शुरु से आ रहा है, वह यह बताता है कि पालदेव सिंह ने जमीन में गड़ी हुई मूर्ति को उठा कर स्थापित किया था। अगर इस बात को भी हम सच मानते हैं तो भी यह साफ जाहिर होता है कि पालदेव सिंह के पहले भी पालगंज में जैन थे जिनके मंन्दिर की मूर्ति जमींन में गड़ी हुई पालदेव को प्राप्त हुई। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि कोई अजैन द्वारा पार्श्वनाथ भगवान का मंन्दिर अवश्य ही नही बनाया गया था न कोई जैन द्वारा मन्दिर को तोड़कर मूर्ति जमीन में गाड़ा गया होगा। अशातना के भय से भले ही जैनों ने मूर्ति को जमीन में गाढ़ दिया हो मगर मन्दिर को तोड़ नही सकते। और जब पालदेव सिंह की जमींदारी कायम होने के पहले वहां पर पार्श्वप्रभु की मूर्ति थी तो अवश्य ही वहां पर जैनों का निवास था और वह जैन इस सराक जाति के पूर्वज श्रावक छोड़कर और कोई नहीं थे। दूसरी तरफ छोटानागपुर की प्राचीन सभ्यता संस्कृति के अनुसंधान के क्रम में तत्कालीन छोटानागपुर के कमिश्नर Lt. Col E. T. Dalton ने अपने लेख A Tour in Manbhum in 1864-65 में लिखा है कि:-"In the district of Manbhum. We find two distinet types architectural remains, Those that appear most ancient, and are said by the people to be sc, are ascribed, traditionally, and no doubt Correctly to a race called variously Serap, serab, Serak, Sarawaka,who were probably the Aryan Colonist in this part of India as even the Bhumij, who of the existing population claim to be the oldest settlers and whose ancestoer had not the skill to construct such monuments declare that the first settlers of their race found these ruins in the forest that they cleaned.

छोटानागपुर के इस क्षेत्र के प्राचीन जैन सभ्यता संस्कृति के अवशेष ही यह प्रमाण करते है कि यहां पर श्रावकों का अर्थात सराकों के पूर्वजों का आगमन आर्य जाति के रूप में पहले हुआ था।

श्रावक लोगों द्वारा छोटानागपुर क्षेत्र में आने के पश्चात अपने

भोजन तथा आवास के लिये उन्हें संघर्ष करना पड़ा था। पश्चिम या मध्य भारत के जैसी यहां की आबादी नहीं थी और ना ही उपजाऊ भूमि। इसलिये प्रारंम्भ में सराकों को अनाज के लिये अपने हाथ से खेती भी करनी पड़ी। फिर यहां पर दिनभर शिकार के पीछे दौड़ने वाले आदिवासियों को समझा बुझाकर अपने खेत में काम करने के लिये लाया गया। उनलोगों को खेत में काम करना सिखाया। उनको मजदूरी के बदले में अनाज दिया। आसान तरीके से जो उनको भोजन मिल गया इससे वह मजदूर काफी सन्तुष्ट हुये। जमीन तो काफी थी मगर उन आदिवासियों को समझ नही थी। वे लोग अपने परिश्रम द्वारा श्रावकों के खेत बना दिये। उनके खेत में अनाज उपजा दिया मगर स्वतंत्र रुप से अपने खेतों पर काम कर अन्न उपजाने की समझ ही उनके पास नहीं थी। इसका फायदा उठाकर सराक जाति ने उन आदिवासियों के द्वारा खेती लायक काफी जमीन बना कर साथ-साथ ऋण जाल में फंसाकर आदिवासियों को अपना गुलाम बनाकर रखा था। श्रावक लोगों ने उन्हें कुछ शिक्षा भी दी थी जैसे गांव में बसना, खेती करना, जंगल से फल मूल, जड़ी बूटी आदि संग्रह कर पैसा कमाना। मगर उस कमाई का पैसा उनका ऋण चुकाने में ही चला जाता था।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

पुर्वानुवृत्ति

मलयासुन्दरी पर इस समय अकस्मात् विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ने से उसकी यह सच्ची परीक्षा का समय था। उसने जो बाल्यवय में संस्कारी शिक्षण प्राप्त किया था उसके प्रभाव से हिम्मत औरं धैर्य का अवलंबन ले वह अपने ही घोर कर्मों की निंदा करती थी ।

राजा का अन्तिम निश्चय सुनकर मलयासुन्दरी ने भी धैर्यपूर्वक प्राण त्याग का निश्चय कर लिया। अब वह पंच परमेष्ठी मंत्र का जाप करती हुई शहर से बाहर रहे अंध कूप को लक्ष्य में कर निर्भयता से अपने रक्षक पुरुषों के आगे आगे चल पड़ी।

राजकुमारी की यह स्थिति देख कर, आरक्षक लोगों के हृदय में भी दया का संचार होता था। उसके सखी वर्ग की स्थिति बहुत ही करुणाजनक दिखायी पड़ती थी। वे चौधारा आँसुओं से मुख धोतीं हुई रूदन करती थीं। हे हृदय! राज कुमारी की ऐसी दशा देखकर भी तू किस तरह जीवन धारण किये हुए है? हे कुमारी! तेरे मधुर आलाप, सारगर्भित वार्ता और हृदय की सरलता से प्राप्त होनेवाला आनन्द अब हम किससे पायेंगी? हे देवी! यह तेरी दशा तेरे बदले हमें क्यों न प्राप्त हो गई? हे दिव्य गुण धारण करनेवाली, सरल बालिका! तेरे बिना इस शहर में रहना हमारे लिये सर्वथा असंभवित होगा? इस प्रकार बोलकर उसे हृदय से चाहने वाली उसकी तमाम सखियां विलाप करके देखनेवाले मनुष्यें को भी रुलाती थीं।

राजा ने अपनी इकलौती कुमारी को गुस्से में आकर मार डालने की आज्ञा दे दी है यह बात फैलने पर शहर में कोलाहल सा मच गया। शहर के बड़े-बड़े आदमी राजा के पास आकर विनय पूर्वक प्रार्थना करने लगे- हे नरनाथ! यह क्रोध करने का स्थान नहीं है। बच्चों से अपराध होने पर भी क्या उन्हें प्राणदंड की शिक्षा दी जा सकती है? हे चतुर

नराधीश! यदि आपको ऐसा ही अनर्थ करना था तो यह स्वयंवर मंडप का आडम्बर किसलिए रचाया? कन्या के विवाह के लिये उत्सुक होकर आये हुए सैकड़ों राजकुमारों को आप क्या जबाव देंगे।

इत्यादि अनेक प्रकार से प्रजा के प्रमुखों ने राजा को बहुत कुछ समझाया, परन्तु क्रोधान्ध राजा अपने विचार से पीछे न हटा। नगर की औरतें बोलती थीं-हाय, महारानी चम्पकमाला कुमारी की माता होने पर भी अपनी सन्तान पर ऐसा जुल्म करते हुए राजा को मना नहीं करती? जितने मुंह उतनी ही बातें होती थीं, परन्तु परिणाम शून्य ही था।

अनेक राजपुरुषों से विष्टित राजकुमारी उस अन्धकूप के किनारे पर आ पहुँची। पंच परमेष्ठीमंत्र का शरण लेकर महाबल कुमार को याद करती हुई और दर्शक जनता के हा-हाकार के बीच, राजकुमारी ने बिजली की झड़प से उस जलरहित कुएँ में झंपापात कर दिया। हृदय को विदारण करने वाला यह भयानक दृश्य दयापूर्ण हृदय वाले मनुष्यों से न देखा गया। उनके नेत्रों से चौधारे आंसू बहने लगे। बहुत से मनुष्य कन्याघातक कहकर राजा की निन्दा करते थे। इस तरह कुमारी के दुःख से दुःखित होकर बड़े कष्ट से रात्रि के समय लोग वापिस अपने घर गये। राजपुरुषों ने भी शहर में आकर राजसभा में विचारमग्न बैठे हुए महाराज वीरधवल को राजकुमारी के अन्धकूप में स्वयं झंपापात करने की बात कह सुनाई।

कुमारी की मृत्यु का समाचार सुनकर राजा सकुटुम्ब आनन्दित हुआ। वह विचारने लगा-कुमारी की मृत्यु से मेरे राज्य और कुटुम्ब की रक्षा हो गई। स्वयंवर में बुलाये हुए राजकुमारों को मैं अभी संदेश भेज देता हूँ कि किसी गुप्त रोग के कारण मलयासुन्दरी की अकस्मात् मृत्यु हो गई है, इसलिए आपलोग स्वयंवर में आने का कष्ट न उठावें।

पाप का घड़ा फूटा

मलयासुन्दरी की मृत्यु से राजकुल में शोक का कुछ भी चिन्ह मालूम नहीं देता था। परन्तु कभी-कभी दास दासियों का टोला मिलकर आपस में मलयासुन्दरी के गुणों की याद कर खेद प्रकट करता था। शहर के भी विशेष हिस्से में यही बात मालूम होती थी। जहां तहाँ पर स्त्री पुरुष मिलकर कुमारी का शोक प्रकट करते थे। यद्यपि राजा के

मन में शोक का लेश भी न था, तथापि रह रहकर कोई अव्यक्त वेदना उसके हृदय को कचोटती थी। उसे लोक लाज का भी थोड़ा भय जरूर था। राजकुटुम्ब में गत रात्रि का कुछ जागरण होने से एवं आज सारे दिन का थोड़ा बहुत खेद होने से ज्यों त्यों रात होती गई त्यों-त्यों राजमहल शान्त स्थिति को धारण करता गया। तथापि अकस्मात् ही यह भयानक घटना बनने से इस घटना के साथ सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों में अभी निन्द्रादेवी ने प्रवेश नहीं किया था।

अर्धरात्रि का समय होने आया, सारे महल में शान्ति मालूम होती थी, इस समय दो मनुष्यों ने गुप्त वेष में रानी कनकवती के महल में प्रवेश किया। उसके रहने के कमरे के द्वार वन्द थे। वे दोनों पुरुष फिरते हुए दूसरे द्वार की तरफ लौटे। दरअसल में रानी के रहने के कमरे का यही मूल द्वार था जहां पर वे दोनों पुरुष आकर ठहरे हैं। दैववशात् कमरे का यह मुख्य द्वार भी उन्हें बन्द मिला, परन्तु द्वार के छिद्रों से अन्दर दीपक का प्रकाश मालूम होता था। वे दोनों पुरुष चुपचाप वहां ही खड़े हो गये और द्वार के छिद्र से दृष्टि लगाकर अन्दर देखने लगे।

इस समय कनकवती के आनन्द का पार न था। आज उसने उद्‌भव वेष पहना था। लक्ष्मीपुंज हार उसके हाथ में शोभ रहा था। हार को देख वह हर्ष के आवेश में आकर बोलती थी - हे दिव्यहार! मेरे बड़े सद्‌भाग्य से ही तू मेरे हाथ में आया है। तेरे ही प्रताप से मैंने आज अपने मनोवांछित कार्य को सिद्ध किया है। तुझे छिपाकर अनेक प्रपंच के वचनों से राजा को कोपित कर जन्मान्तर की बैरन मलयासुन्दरी को प्राणदण्ड दिला उससे बदला लिया है। चिंतामणि के समान तेरी प्राप्ति भी बड़ी दुर्लभ है। अब से राजा को भी मेरे आधीन करके सदैव मुझे इच्छित फल की प्राप्ति कराना। हर्षावेश में कनकवती को इस समय इस बात का ध्यान बिलकुल न रहा था कि मैं क्या बोल रही हूँ और मेरे इस नग्न सत्य पूर्ण कथन को कोई सुन तो नहीं रहा है।

कनकवती के हाथ में लक्ष्मीपुंज हार को देखकर, तथा उसके पूर्वोक्त वचनों को सुनते ही गुस्से के मारे उन दोनों पुरुषों का खून उबलने लगा। शान्त हुआ कोपानल फिर से विशेषतया प्रदीप्त हो गया। उनमें से एक राजपुरुष सहसा चिल्ला उठा हा! हा! पापिनी! तूने मुझे

प्रपंच से फँसा कर ठग लिया? निर्दोष पुत्री के पास से हार चुराकर प्रपंच के द्वारा मुझे कुपित कर निरपराध पुत्री का घात कराया! हे दुष्टा! कनकवती! तूने मुझे कुटुम्बसहित ठगा? मेरी उस गरीब लड़की ने तेरा क्या अपराध किया था? उसने आजतक कभी किसी चींटी तक को भी तकलीफ न पहुँचाई थी। उसके शिर पर ऐसा घोर कलंक!! इस प्रकार बोलता हुआ, जोर से द्वार को तोड़ता हुआ दुःख से विकलित हो वह पुरुष मूर्छित होकर सहसा पृथ्वी पर गिर पड़ा।

इस आधी रात के समय कनकवती के महल में आने वाले ये दो पुरुष कौन हैं? इस बात का भेद पाठकगण स्वयं समझ गये होंगे। गश खाकर जमीन पर मूर्छित अवस्था में गिर जाने वाले स्वयं महाराज वीरधवल हैं और साथ में दूसरा मुख्यमंत्री सुबुद्धि है।

वे रात्रि चर्या देखने के लिये निकले थे। उन्होंने अब तक सच्चाई का निर्णय करने का प्रयास न किया था, अगर इतनी दीर्घ दृष्टि की होती तो मलयासुन्दरी को जीवित दशा में कुएँ में फेंकवा देने का प्रसंग न आता। वे इस धारणा से कनकवती के महल पर आये थे कि कनकवती ने राज्य पर आक्रमण करने वाले, और राजा को मार कर निर्वंश करने का भयंकर खुफिया भेद जानकर राज्य पर महान् उपकार किया है, इसलिए इस समय उसके पास जाकर कुछ विशेष हकीकत जाननी चाहिए, और उसका महान् उपकार मानना चाहिये। इसी उद्देश्य से विशेष रात जाने पर भी मंत्री और महाराज, कनकवती के महल पर आये थे। परन्तु यहां आते ही कनकवती के उग्र पापका घड़ा फूट गया। उसके गुप्त प्रपंच का परदा खुल गया। और उसके प्रपंच में फंसकर विचार न करने वाले राजा वीरधवल के हृदय का भी अन्धकार दूर हो गया।

राजा की पुकार और जमीन पर पड़ने का शब्द सुनते ही सारे राजमहल में अकस्मात् कोलाहल हाहाकार मच गया। वहां पर शीघ्र ही अनेक राजपुरुष एकत्रित हो गये और राजा को होश में लाने का उपचार करने लगे।

सोमा कहने लगी हे पाथिको! इस अवसर का लाभ उठाकर मैं और मेरी स्वामिनी कनकवती, हम दोनों जनीं मृत्यु के भय से पिछली तरफ की खिड़की से नीचे जमीन पर कूद पड़ी। हमें थोड़ीसी चोट तो

जरूर लगी, परन्तु मृत्यु भय के सामने वह कुछ भी मालूम न पड़ी। हम वहां से भाग कर, एक शून्य मकान में जा घुसी और वहां छिपकर पास वाले रास्ते से आते जाते लोगों का वार्तालाप सुनने लगी।

इतना कहकर सोमा बोली- हे कुमारों! अभीतक जो मैंने आपके सामने वृतान्त कहा है वह सब मेरी नजर से देखा हुआ और स्वयं अनुभव किया हुआ है। अब इसके बाद मैं जो कुछ कहूँगी वह मैंने छिपकर उस शून्य घर में रहकर लोगों के मुख से सुना हुआ है।

मलयासुन्दरी ने कहा फिर राजा की क्या दशा हुई यह सुनाओ।

सोमाः राजा कुछ देर बाद जागृति में आते ही ऊंचे स्वर में पुकारने लगा। भय से व्याकुल हो रानी चंपकमाला भी वहां पर आ पहुँची और प्रधान से कहने लगी मंत्री! यह प्राण नाशक अकस्मात् दूसरी क्या घटना घटी? अश्रुपात करते हुए सुबुद्धि नामक मंत्री ने राजा के साथ स्वयं देखा हुआ और कानों से सुना हुआ कनकवती का सर्व वृत्तान्त महारानी चंपकमाला को कह सुनाया।

राजकुमारी की सर्वथा निर्दोषता और कनकवती का प्रपंच जाल मंत्रीद्वारा मालूम होने से मलया सुन्दरी की मृत्यु के शोक से तमाम लोगों के नेत्रों से जलधार बहने लगी। रानी चंपकमाला राजा के कंठ का अवलंबन ले निर्दोष पुत्री के मृत्यु शोक से करुण स्वर से रुदन करने लगी। इस समय सारे महलों में तो क्या सारे शहर में शोक का साम्राज्य छा गया। राजमहल में इतना करुणा जनक रुदन होने लगा कि जो सुनने वाले मनुष्यों के हृदय को रुलाये वगैर न रहता था। विलाप करते हुए राजा और रानी को आश्वासन देते हुए प्रधान मंत्री बोल उठा- महाराज! इस तरह रुदन करने से अब क्या लाभ होगा। जल्दी वहां जाकर उस अंधकूप में राज कुमारी की तलाश करें। कदाचित् हमारे पुण्योदय से राजकुमारी उस अंधकूप में जीवित मिल जाय?

रोना धोना छोड़कर राजा आदि हजारों मनुष्य मध्य रात्रि के समय उस अंधकूप के पास जा पहुँचे। शीघ्र ही बड़ी-बड़ी मशालें जलवाकर प्रकाश सहित उस अंधकूप में मंच द्वारा मनुष्यों को उतारा गया। परन्तु चारों तरफ अच्छी तरह तलाश करने पर भी उस अन्धकूप में राजकुमारी का चिन्ह तक भी मालूम नहीं हुआ। निराश होने के कारण क्रोध से

भभकता हुआ राजा वहाँ से वापिस कनकवती के महल में आया। द्वार खुलवाकर, अन्दर तलाश की, परन्तु वहाँ पर कोई भी दिखायी नहीं पड़ा। इसलिए महाराज ने राज पुरुषों को आज्ञा दी कि जाओ। उस दुष्टा को तलाश करो; वह दुष्कृत्य करके कहीं भाग गई? मालूम होता है पिछली खिड़की से कूद गई है। सब जगह तलाश कर, उस दुष्टा को पकड़ लाओ।

हे सत्पुरुषों! राजा वीरधवल की इस समय जो हालत है उसको देखते हुए वह रात्रि के व्यतीत होने तक भी जीवित रह जाय तो बड़ा भाग्य समझो। प्रातःकाल होने पर तो वह अवश्य ही चिता में प्रवेश करके प्राण त्याग करेगा उधर हमारी खोज में फिरते हुए राजपुरुषों को देखकर कनकवती ने मुझ से कहा- अब हम दोनों को एक जगह रहना फायदेकारक नहीं है। यदि राजपुरुष हमें देख लेंगे तो शीघ्र ही मृत्यु की शरण कर देंगे। यह कहकर उसने मेरे पास से लक्ष्मीपुंजहार आदि सारी वस्तुयें ले कर वह अपनीं परिचिता मगधा नामक वेश्या के घर चली गई। वहाँ पर अकेली रहने की हिम्मत न पड़ने से मैं वहाँ से लुकती छिपती इस तरफ चली आ रही हूँ।

हे पथिको! आपने जो मेरे भय का कारण और मेरा परिचय पूछा था; सो मैंने आपके सामने कह सुनाया।

महाबल-अहो! आश्चर्य की बात? दुष्टा! स्त्रियों के कैसे विचित्र चरित्र होते हैं! निर्दोष कन्यारत्न का नाश कराया! राजा को मरणान्तसम कष्ट में डाला और अपने भी सुखका नाश कर, निन्दत होकर देश त्याग किया। धिक्कार है ऐसी दुष्टा स्त्रियों की तुच्छ बुद्धि को!!!

पूर्वोक्त प्रकार से मलयासुन्दरी के संकट में पड़ने का रहस्योद् घाटन कर सोमा बोली-अब रात्रि पूर्ण होने आई है; इसलिए न जाने मेरे पीछे मेरी खोज में कोई राजपुरुष न आजाय, अतः मैं अब आगे जाती हूँ यह कहती हुई और पीछे की ओर देखती हुई सोमा आगे चली गई। सोमा के चले जाने पर कुमार बोला- कुमारी! जिस रोज हमारा प्रथम मिलाप हुआ था उसी दिन से ये वैर धारण करने वाली तुम्हारी सौतेली माता कनकवती ने मौका पाकर तुम्हें कष्ट में डाला है । हे सुलोचने! कनकवती की दासी सोमा से ही मुझे तुम्हारा अति कष्टदायक वृतान्त मालूम हो गया। अहो! थोड़े ही समय में तुमने मृत्यु के समान कैसा महा

भयंकर कष्ट सहा!

सुन्दरी! उस अन्धकूप में झंपापात करने पर और इस समय यहां पर अजगर कें मुख से तुम्हारी प्राप्ति का यही कारण मालूम होता है, जब तुमने उस अन्धकूप में झंपापात किया तब वहाँ पर रहे हुये इस अजगर ने तुम्हें मूर्छित अवस्था में सटक लिया और उस अन्धकूप से बाहर निकलने का कोई मार्ग होगा जिससे निकलकर वह शीघ्र ही तुम्हें पचाने के लिये इस आम के वृक्ष से लपेटा देने के लिये यहाँ आया था। मैंने उसके दोनों होंठ पकड़ कर उसे चीर डाला और उसके मुखसे तुम्हें सीप से मोती के समान निकाल लिया।

पास ही में पड़े हुये अजगर को देख कर मलयासुन्दरी भय भीत हो उठी। महाबल बोला "सुन्दरी! अब तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है ऐसी भयंकर दशा में भी हमारा दुर्घट मिलाप हमारे अनुकूल भाग्य की सूचना करता है।"

अब रात्रि व्यतीत होने आई थी; पूर्व दिशाने अपने स्वामी सूर्य का आगमन जानकर लालरंग की साड़ी पहन ली थी। आकाश में टिमटिमांते हुये तेजस्वी तारे धीरे-२ छिपते जा रहे थे। वृक्षों पर बैठे हुये पक्षीगणों ने चहचहाना शुरू कर दिया था। रात भरके भूखे पशु भी अपने भक्ष्य की गवेषणा में इधर -उधर फिरने लगे थे। प्रातःकाल के मंद और शीतल पवन से जंगल के बड़े-बड़े वृक्षों की पत्तियाँ हिल रही थीं अब सूर्य देव भी अपनी सुनहरी किरणों से जगत को जागृत करने के लिए उदयाचल पर आ विराजे थे। प्रातःकाल के ऐसे सुहावने समय में महाबल कुमार और पुरुषवेश धारक मलयासुन्दरी वहाँ से उठकर समीपवर्ती गोलानदी पर आये। वहाँ पर दन्तधावन तथा मुख प्रक्षालनादि कर वे वापिस उसी आम वृक्ष के नीचे आये, और इसके बाद वहाँ से चलकर गोलानदी के किनारे-२ वे भट्टारिका देवी के मठपर आ पहुँचे।

वहाँ पर बहुत समय से खड़ी की हुई काष्टफलियों को देख कर कुमार कुछ सोच विचार के मस्तक हिलाते हुये राजकुमारी से बोले- सुन्दरी! मुझे अब से मुख्य तीन काम करने होंगे, जिसमें पहला कार्य तुम्हारे वियोग से मरते हुए तुम्हारे माता पिता की प्राणों की रक्षा दूसरे तुम्हारे पिता की सम्मति से अनेक राजकुमारों के समक्ष स्वयंबर में

तुम्हारा पाणिग्रहण करना और तीसरा लक्ष्मीपुंज हार को स्वाधीन कर माता को देकर, उनके प्राण बचाके उनके समक्ष की हुई अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करना है।

सुन्दरी! इन तीनों कार्यों में मुझे तुम्हारी पूर्ण सहायता लेनी होगी। लक्ष्मीपुंज हार को स्वाधीन करना यह कार्य तुम्हें अपने जिम्मे लेना होगा। यह तुम्हारा पुरुष वेष अभी कुछ समय तक ऐसा ही रखना पड़ेगा। तुम्हें यहां से मगधावेश्या के घर जाना चाहिए। क्योंकि अभीतक कनकवती वहां पर ही होगी। वहाँ जाकर तुम्हें ऐसा आचरण करना चाहिए कि जिससे कनकवती के पास रहा हुआ लक्ष्मीपुंज हार तुम्हारे हाथ आजाए। एक बात विशेषतया ध्यान रखना, नगर में इस तरह प्रवेश करना कि कहीं पर राज पुरुष तुम्हारी ओर विशेष ध्यान से न देख पावें। मगधा वेश्या के घर जाकर आज की सारी रात तुम कनकवती और हार की खोज में निकालना। कल का सारा दिन भी वहां पर ही बिताना और संध्या के समय वापिस यहाँ ही आना। मैं भी निर्धारित कार्य यथोचित करके वापिस इसी भट्टारिका के मन्दिर में कल शाम को आऊंगा। दोनों का कल संध्या के समय यहाँ पर ही मिलाप होगा। मैं यहां से इस वक्त श्मशान भूमि की ओर जाता हूँ, क्योंकि तेरे वियोग से दुःखित हुए तेरे माता पिताओं का रक्षण करना हमारा पहला कर्तव्य है। तुम्हारे हाथ में जो यह नामांकित अंगुठी है, यह तुम मुझे दे दो, क्योंकि शहर में इसे तुम्हारे हाथ में देख चोर की भ्रांति से तुम्हारे प्रति कोई उपद्रव न कर सके।

राजकुमारी ने महाबल की तमाम बातें विनीत भाव से ध्यान पूर्वक सुनीं। कुमार का सहबास न छोड़ने की इच्छा होते हुए भी उसे मुद्रारत्न देकर उसने उसकी तमाम बातों को शिरोधार्य किया। अब वे अपने-अपने कार्य की सिद्धि के लिए दोनों वहां से चल दिए। रास्ते में चलते हुए महाबल बिचारने लगा-स्वयंबर में अपनी-अपनी सेना सहित अनेक राजकुमार आयेंगे, उस समय एक साधारण पथिक के समान स्वयंवर में मेरा प्रवेश होना भी असंभव है। उसके पिता की सम्मति से राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण करना तो दूर रहा परन्तु इस दशा में एकाकी उन राजकुमारों की पंक्ति में जाकर बैठना भी दुष्कर होगा, इसलिए मुझे ऐसे

समय अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए कुछ प्रपंच अवश्य रचना पड़ेगा। जो कार्य बल से नहीं होता वह बुद्धि प्रयोग से सुलभता पूर्वक हो सकता है। इत्यादि विचारों की उलझन में महाबल आगे बढ़ा जा रहा था, इतने में ही एक बड़वृक्ष के नीचे हाथी बँधा देखा। उस हाथी के पास कई राजपुरुष उसकी लीद को पानी में धो धो कर चलनी में छान रहे थे यह देखकर महाबल ने उसका कारण पूछा-

राजकुमारों ने उत्तर दिया महाशयजी! कल बहुत से लड़कों के साथ यहां पर राजकुमार आये थे । उस समय एक गन्ने में सुवर्ण की जंजीर लपेट कर वे यहाँ खेलने लगे। गन्ना हाथी के पास पड़ जाने से उसने सोने की जंजीर सहित उस गन्ने को उठा कर खा लिया। अब उस जंजीर को पाने के लिये राजा की आज्ञा से हम लोग हाथी की लीद को पानी से धोकर छान रहे हैं। यह बात सुन कर महाबल कुमार ने उनकी आंख बचाकर एक घास का पूला उठा उसमें राज कुमारी की नामांकित सुवर्ण मुद्रिका (अंगूठी) डाल कर पूला हाथी के सामने फेंक दिया। उस पूले को जब हाथी ने अपनी सूँड से उठा कर मुंह में डाल लिया तब महाबल वहां से चल पड़ा।

सिद्ध ज्योतिषी

लगभग एक पहर दिन चढ़ चुका था। इस समय गोला नदी के किनारे हजारों मनुष्यों का जमघट लगा था, पास में ही एक चिता बनी हुई थी।

इसी समय हाथ ऊँचा किये हुए एक सिद्ध ज्योतिषी उन लोगों के जमघट की तरफ दौड़ा हुआ आता मालूम दिया। वह जोर-जोर से चिल्ला रहा था, ठहरो-ठहरो! साहस मत करो। राजकुमारी मलयासुन्दरी अभी जीवित है।

क्रमशः

जैन धर्म की संक्षिप्त रूप रेखा

श्री नरेन्द्र सिंहपतसिंहजी दुगड़

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है। जिन द्वारा प्ररुपित होने के कारण ही इस धर्म का नाम जैन धर्म पड़ा। जिन शब्द का अर्थ है जो राग द्वेष आदि आत्मिक शत्रुओं को जीत लेता है। परन्तु यह शब्द चतुर्विध संघ - साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका के प्रतिष्ठाता तीर्थंकर के पर्याय रूप में ही व्यवहृत् होता है।

जैन धर्म अनादिकाल से चलता आया है। पांच भरत क्षेत्र और पांच ऐरावत क्षेत्रों में जैन दर्शनानुसार काल दो भागों में विभक्त है- उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी। उत्सर्पिणी को क्रमिक अभ्युदय काल एवं अवसर्पिणी को क्रमिक अवनतिकाल कहा गया है। उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल के तीसरे और चौथे आरे में २४ तीर्थंकर जन्म लेकर धर्म को सुव्यवस्थित करते है। काल चक्र से अर व विभाजन को आरा कहते है। इनकी कुल संख्या बारह है। छह उत्सर्पिणी के एवं ६ अवसर्पिणी के। वर्तमान में अवसर्पिणी काल का पंचम आरा चल रहा है। जम्बू के दक्षिणार्थ क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेव जी (श्री आदिनाथ जी) एवं अन्तिम तीर्थंकर श्री वर्धमान महावीर स्वामी हैं। कुल चौबीस तीर्थंकर हुए। इन्होंने स्वतंत्र रूप में धर्म के तत्वों को प्ररूपित किया। सभी ने मूल रूप से एक सा ही उपदेश दिया है परन्तु द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार थोड़ा हेर-फेर होता रहा है।

जम्बूद्वीप के दक्षिणार्थ भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के २४ तीर्थंकरों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं।

१. श्री ऋषभदेवजी	२. श्री अजितनाथजी
३. श्री संभवनाथजी	४. श्री अभिनन्दन स्वामी जी।
५. श्री सुमतिनाथजी	६. श्री पदम् प्रभु जी।
७. श्री सुपार्श्वनाथजी	८. श्री चंद्र प्रभुजी।

९. श्री सुविधिनाथजी	१०. श्री शीतलनाथजी।
११. श्री श्रेयांसनाथजी	१२. श्री वासुपूज्यजी।
१३. श्री विमलनाथजी	१४. श्री अनन्तनाथजी।
१५. श्री धर्मनाथजी	१६. श्री शांतिनाथजी।
१७. श्री कुन्थुनाथजी	१८. श्री अरनाथजी।
१९. श्री मल्लिनाथजी	२०. श्री मुनि सुब्रत स्वामीजी।
२१. श्री नमिनाथजी	२२. श्री नेमिनाथ जी।
२३. श्री पार्श्वनाथजी	२४. श्री महावीर स्वामीजी। बर्द्धमान स्वामीजी

जैन मान्यतानुसार लोक तीन है। अर्ध्वलोक, अधोलोक एवं मध्यलोक। मध्यलोक को तिर्यंच लोक भी कहते हैं। यह लोक द्वीप समुद्र मय है। इन द्वीपों के मध्य में स्थित है जम्बूद्वीप। जम्बूद्वीप बलयाकार लवण समुद्र से घिरा हुआ है। इसके मध्य में मेरु पर्वत स्थित है। जम्बूद्वीप छः वर्षधर पर्वतों भरतवर्ष, हेमवतवर्ष, हरिवर्ष, रम्यकवर्ष, हैरण्यवतवर्ष और ऐरवत वर्ष से ७ क्षेत्रों में विभाजित है। प्रत्येक वर्ष घर पर्वत दूसरे के उतर में स्थित है।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001.
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91(33)2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

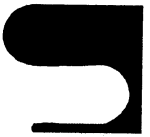

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

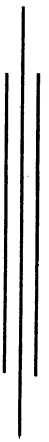

**Steamer Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।
Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.
Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1.	Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3-6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7-8)		150.00
	Vol -4 (satakas 9-11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.}	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00

Hindi

6.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani	Price Rs.	40.00
7.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
8.	Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
9.	Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani.	Price: Rs.	50.00
10.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price: Rs.	60.00
11.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat,	Price: Rs.	45.00
12.	Ganesh Lalwani Pancadasi.	Price: Rs.	100.00
13.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price: Rs.	30.00

Bengali:

14.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price: Rs.	40.00
15.	Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita.	Price:Rs.	20.00
16.	Puran Chand Shyamsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price.Rs.	15.00
17.	Satya Ranjan Bandyopadhyay-Prasnottare Jaina-dharma	Price:Rs.	20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 5 TITTHAYARA August 2000
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225